शरीरविज्ञानविमर्श

डॉ0 जयमंगल पाण्डेय

मानव–सत्ता के 3 शरीर हैं– (1) कारण शरीर (2) सूक्ष्म शरीर तथा (3) स्थूल शरीर। 'कारण शरीर', काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या मात्सर्यादि वासनाओं का संवलितरूप है एवं 'मन' में अवस्थित हो, जीव के साथ चौरासी लाख योनियों से होकर गुजरता हुआ, किंवा यात्रा करता हुआ आया है और समष्टि रूप में यही शरीर (कारण शरीर) जीवों की प्रकृति बन गया है। इतना ही नहीं; अपितु इसी शरीर के अधिष्ठान भूत 'मन' में ही जीवों के जन्म–जन्मान्तरों के सुख–दुःखात्मक, ज्ञानाज्ञानात्मक एवं शुभाशुभ कर्मों के समस्त संस्कार विद्यमान रहते हैं और जो प्राणियों के अगले नये शरीरों में, अपने–अपने नियत उपादानों को पाकर, यथावसर व्यक्त होते हैं। जिस प्रकार से वर्तमान में प्रचलित मोबाइल–सिम एवं सूक्ष्म चिप में असंख्य नम्बर व असंख्य फंशनिंग अव्यक्तावस्था में विद्यमान रहती हैं, ठीक उसी प्रकार से पूर्वविहित सारे भाव एवं सारी की सारी वासनाएँ मन में ही विद्यमान रहते हैं। यहाँ तक मैंने जीव के प्रथम–'कारण शरीर' पर प्रकाश डालने का प्रयास किया, जो कि नितान्त भावात्मक घटक है।